।। शरणागत स्तोत्र ।।

श्री श्री श्री श्री श्री १०००८ स्वामी शिशू सत्यविदेहानंद सरस्वती विरचित

।। शरणागत स्तोत्र ।।

हे माँ दुर्गे आप के चरण कमल हमारे हृदय में रहें,
आप हमारे मानस में नित्य बसो ।
हे माँ दुर्गे
दया करो,
क्षमा करो,
कृपा करो,
ममता करो,
करूणा करो,
रक्षा करो,
छोटी कन्या बनकर हमारे साथ खेला करो ।।

भगवति तुम्हारे चरणो में
मै दिन हू पर हिन नही, मै लीन हू पर तुम बिन नही ।
तुम तारक हो इस जीवन की, भगवति तुम्हारे चरणो में ।।१
यह पूजा जप तप नेम कही, यह पाठ व्रत तप देन नही ।
संकिर्तन किर्तन आनंद मां, भगवति तुम्हारे चरणो में ।।२
जय जय जगदानंदे वरदे, जय श्री विद्या जय जय शारदे ।
तुम प्रेरक हो, पर ज्ञानम मां, भगवति तुम्हारे चरणो में ।।३
जब जब षडशत्रु मुझे हरदे, तब तब दुर्गे आंचल करदे ।
तुम रक्षक हो इस जीवन की, भगवति तुम्हारे चरणो में ।।४
मैं ध्यान धरु या गान करु, मैं शिष्य तुम्हारा तुम हो गुरु ।
तुम श्रेयस हो इस जीवन की, भगवति तुम्हारे चरणो में ।।५
जब राग द्वेष से भर जाऊ, ले नाम तुम्हारा तर जाऊ ।
तुम तेजस हो इस जीवन की, भगवति तुम्हारे चरणो में ।।६
बलीदान मान मम शव तन का, स्तनपान, सन्मान तव धन का ।
तुम अक्षत हो इस जीवन की, भगवति तुम्हारे चरणो में ।।७
शिशू विदेहानंद वरदे, वरदे हरदे मां कृपा करदे ।
समवर्तन - वर्तन आनंद मां, भगवति तुम्हारे चरणो में ।।८
विदेहानंदो शरणम् - वरणम्, आनंदमयी चरणम् - तरणम् ।
शिशू विदेही शरणम् मां, भगवति तुम्हारे चरणो में ।।९